ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०४
दिनांक– मंगलवार, 12 जनवरी, 2021

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 23.7 एवं 13.1 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 86 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 55 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.6 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाष अवधि औसतन 5.3 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 16.1 एवं दोपहर में 21.3 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13–17 जनवरी, 2021)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 13–17 जनवरी, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–
- पूर्वानुमानित की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते है। इस अवधि में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छा सकता है।
- तापमान में २–३ डिग्री सेल्सियस गिरावट आने की सम्भावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 9 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 7 से 10 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 70 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- विलम्ब से बोयी गई गेहूँ की फसल जो 30 से 35 दिनों की हो गई हो, उसमें सिंचाई के बाद चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों (बथुआ) की अधिकता होने पर 2,4–डी0 सोडियम लवण प्रति हेक्टेयर 1 किलोग्राम तथा संकरी पत्ती वाले खरपतवार जैसे– वन गेहूँ एवं जंगली जई से आक्रान्त फसल वाले खेत में क्लोडिनोंफॉप (टॉपीक या झटका) 60 ग्राम सक्रिय तत्व 400 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सब्जियों में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। पिछात फूलगोभी/बन्दागोभी में डायमंड बैक मॉथ कीट की निगरानी करें। यह कीट सलेटी भुरे रंग का पिल्लू होता है, जिसके शरीर पर छोटे–छोटे बाल होते है। इसके पिल्लू पत्तियों को खाकर उसमें छोटे–छोटे छेद बना देते है। पौधे की वृद्धि रुक जाती है,फलस्वरुप पौधो पर शीर्ष छोटा बनता है तथा फसल की काफी हानि होती है। बचाव हेतु प्रकाष प्रपंच लगावे। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पेनोसेड 1 मी0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित रुप से निगरानी करे। यह सुक्ष्म आकार का कीट पौधो के सभी मुलायम भागो–तने व फलीयों का रस चुसते है। ये कीट मधु–स्त्राव निकालते है, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह–जगह काले धब्बे दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों में शाखाएँ कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सुखने लगते है। फलीयॉ कम लगती है तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- चने की फसल में सूंडी कीट की निगरानी करें। यह कीट चने की फलियों में छेद करके अन्दर प्रवेष कर जाती है और दानों को खाकर खोखला कर देती है, जिससे उपज में काफी कमी आती है। यह कीट दिन में भी पौधे में लगी फलियों में आधी घुसी हुई और आधी लटकी हुई देखा जा सकता है। इससे बचाव हेतु खेतो के पास प्रकाष प्रपंच लगाकर प्रौढ़ कीटो को आकर्षित कर तथा नष्ट कर इसकी संतति को कम किया जा सकता है। फिरोमोन प्रपंश / 3–4 प्रपंस प्रति एकड़ की दर से लगायें। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पेनोसेड 1 मी0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मक्का की फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुदे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फोरेट 10 जी0 या कार्बोफ्यूरान 3 जी0 का 7–8 दाना प्रति गाभा दें। अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन 250–300 मि0ली0 दवा 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- टमाटर की फसल में फल छेदक कीट की निगरानी करे। इस कीट के पिल्लू टमाटर को बहुत अधिक नुकसान पहुचाते है। ये कच्चे तथा पके टमाटरो में छेद करके उनके अन्दर घुस कर गुदा खाते है। कीट के मल–मूत्र के कारण फल में सड़न प्रारंभ हो जाती है जिससे उत्पादन में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव हेतु 8–10 फेरोमौन ट्रैप प्रति हेक्टेयर खेत में लगाये। ब्यूभेरिया बेसियाना जैविक कीटनाषी का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो इन्डोक्साकार्ब 14.5 एस0सी0 1 मी0ली0 प्रति 2.5 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करे।
- पशुपालक भाई दूधारु पशुओं का विशेष ध्यान रखें। इस मौसम में इन पशुओं के दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने हेतु हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ 50 ग्राम नमक, 50 से 100 ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। नियमित रुप से कैल्सियम की सूई दिलायें अथवा तरल कैल्सियम, पशुओं के दाना के साथ मिलाकर खिलायें।

आज का अधिकतम तापमानः 19.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 3.7 डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः 10.4 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.2 डिग्री अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी